डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 14 मूल्य: 5 रुपए पृष्ठ : 4 R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

शीर्षक सत्यापन पत्र संख्या RAJHIN16831/20/01/2013-TC

जयपुर, मंगलवार, 28 सितम्बर, 2021

hillviewsamachar@gmail.com

जेडीए स्वामित्व की साढे चार हजार वर्ग गज भूमि को कराया अतिक्रमण मुक्त

तीन बीघा भूमि पर अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को किया विफल

कार्यालय संवाददाता

जयपुर । जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा प्रभावी कार्रवाई करते हुए जेडीए स्वामित्व की करीब 4500 वर्गगज बेशकीमती भूमि को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। निजी खातेदारी की करीब 03 बीघा कृषि भूमि पर नवीन अवैध आवासीय कॉलोनी का पूर्ण ध्वस्तीकरण कर अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। साथ ही गैर मुमकिन आम रास्ते को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन रघुवीर सैनी ने बताया कि जोन-13 के क्षेत्राधिकार एक्सप्रेस हाईवे पर सफेदा फॉर्म हाऊस के सामने मुख्य सड़क से लगती हुई खसरा नं. 255/691 जेडीए स्वामित्व की करीब 4500 वर्गगज बेशकीमती भूमि पर भू-माफियाओं द्वारा कब्जा-अतिक्रमण कर चार दीवारियों का निर्माण किया जा रहा था; जिसे उपायुक्त जोन-13 के राजस्व व तकनिकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त कर हटवाया जाकर जेडीए स्वामित्व की बेशकीमती भूमि को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। उक्त अतिक्रमण मुक्त भूमि की अनुमानित कीमत करीब 04 करोड रूपये है। जेडीए द्वारा जोन-13 के क्षेत्राधिकार सीकर रोड़ ग्राम-मोटू का बांस में करीब 03 बीघा निजी खातेदारी भूमि पर बाजरे के खेतो के बीचो-बीच बिना भू-रूपान्तरण कराये बिना जेडीए की अनुमति व स्वीकृति के नवीन अवैध आवासीय कॉलोनी बसाने के प्रयोजनार्थ बनाई जा रही ग्रेवल सड़के, व अन्य अवैध निर्माण को जोन-13 के राजस्व व तकनिकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से पूर्ण ध्वस्त किया जाकर अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। कृषि भूमि पर अवैध कॉलोनी विकसित करने व गैर कृषि उपयोग किये जाने के कारण संबंधित निजी खातेदारों के विरूद्ध धारा 175 राजस्थान कास्तकारी अधिनियम के तहत कार्यवाही कर खातेदारी सरकार के नाम करने के सबंध में विधिसम्मत कार्यवाही हेतु जोन उपायुक्त-13 को लिखा गया है। संबंधित से जेडीए के ध्वस्तीकरण की कार्यवाही का नियमानुसार खर्चा-वसूली व अवैध कॉलोनी बसाने वाली सोसायटियों के विरूद्ध रजिस्ट्रार, सहकारिता विभाग को नियमानुसार प्रभावी कार्यवाही हेतु लिखे जाने की कार्यवाहियां सुनिश्चित की जा रही हैं।

राजस्थान में अगले साल से अलग से कृषि बजटः गहलोत बोले

फूड प्रोसेसिंग यूनिट के लिए सरकार किसानों को 2 करोड़ रु. का अनुदान दे रही है, लेकिन व्यापारी इसका फायदा उठा रहे

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि फूड प्रोसेसिंग पॉलिसी में 2 करोड़ तक के अनुदान का फायदा किसान के बजाय व्यापारी उठा रहे हैं। न तो किसानों को इसके बारे में कोई जानकारी है और न उन्हें गाइडेंस मिल रहा है। इसके अभाव में व्यापारी लोग इस काम को कर रहे हैं। गहलोत डूंगरपुर एग्रीकल्चर कॉलेज के वर्चुअल उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। गहलोत ने कहा कि सरकार ने आगे बढ़कर फूड प्रोसेसिंग का काम हाथ में लिया है। एग्रो प्रोसेसिंग में किसान आगे आएं हैं। हम एग्रो प्रोसेसिंग एंड एक्सपोर्ट पॉलिसी के तहत 2 करोड़ तक का अनुदान दे रहे हैं। इसमें फूड प्रोसेसिंग यूनिट लगाने के लिए 1 करोड़ और एक्सपोर्ट यूनिट के लिए 1 करोड़ का अनुदान मिल रहा है। किसान अगर प्रोसेसिंग यूनिट लगाता है तो उसे 2 करोड़ अनुदान मिलता है। अब तक इस स्कीम के तहत 132 करोड़ का अनुदान दिया जा चुका है। इस स्कीम का फायदा उठाने के लिए किसानों को आगे आना होगा।

राज्यपाल की जमकर तारीफः सीएम गहलोत ने राज्यपाल कलराज मिश्र की जमकर तारीफ करते हुए कहा कि कलराज मिश्र जब से राज्यपाल बने हैं। उच्च शिक्षा में सुधाार के लिए रुचि ले रहे हैं। खुद व्यक्तिगत रूप से प्रयास करते हैं कि विश्वविद्यालयों का स्तर सुधरे। राज्यपाल के प्रयासों से विश्वविद्यालयों में एक माहौल बना है। आदिवासी अंचल में शिक्षा का माहौल बना है। पिछली बार हमने बांसवाड़ा में इंजीनियरिंग कॉलेज खोला, डूंगरपुर में अब एग्रीकल्चर कॉलेज खोला है। डूंगरपुर में एग्रीकल्चर कॉलेज की मांग जायज थी।

अगले साल से बनेगा अलग कृषि बजट

गहलोत ने कहा कि राजस्थान में अगले साल से किसानों के लिए अलग से बजट होगा। हमारी घोषणा के बाद तमिलनाडु सरकार ने इस बार किसानों के लिए अलग से बजट पेश किया है। धीरे-धीरे सभी राज्य सरकारें अलग से कृषि बजट पेश करेंगी। हमने किसानों की बिजली के लिए अलग बिजली कंपनी बनाने का फैसला किया है। किसानों को 90 पैसा यूनिट बिजली दी जा रही है। किसानों की बिजली का पैसा नहीं बढ़ाया।

कृषि उद्यमिता को बढ़ावा देते हुए युवाओं को कृषि से जोड़े जाने के हों प्रयास : राज्यपाल

जयपुर। राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा है कि कृषि शिक्षा के लिए कही कोई एक कॉलेज भी खुलता है तो वह युवाओं को कृषि क्षेत्र से जोड़ उन्हें अर्थव्यवस्था में योगदान देने का अवसर प्रदान करने जैसा है। उन्होंने युवाओं को कृषि से अधिकाधिक जोड़े जाने के लिए कृषि उद्यमिता को बढ़ावा देने, कृषि शिक्षा के तहत सूचना-संचार तकनीक आधारित खेती को बढ़ावा देने, स्थानीय जलवायु के अनुरूप कम पानी में अधिक उत्पादन वाली फसलों की पहचान कर कृषि के लिए उनकी अनुशंषा करने का कार्य भी विश्वविद्यालय स्तर पर किए जाने पर जोर दिया। राज्यपाल बुधवार को महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर की संघटक इकाई के रूप में स्थापित कृषि महाविद्यालय, डूंगरपुर के शुभारम्भ अवसर पर राजभवन से ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों को चाहिए कि वे कृषि शिक्षा के दौरान ही युवाओं को एक उद्यमी के रूप में सफल होने के लिए तैयार करें। मिश्रा ने इसके लिए उद्यमिता, कौशल प्रशिक्षण की सुविधाओं से युवाओं को लाभान्वित करने के प्रयास जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि युवाओं को कृषि के क्षेत्र में अपना नया 'स्टार्ट-अप' व्यवसाय शुरू करने के लिए कृषि शिक्षा के दौरान ही प्रेरित किया जाए। मिश्र ने कृषि के अंतर्गत खाद्य प्रसंस्करण, भण्डारण, विपणन आदि के साथ फार्म टूरिज्म जैसी गतिविधियों को बढ़ावा देने की चर्चा करते हुए कहा कि कृषि शिक्षा इस समय सबसे बड़ी जरूरत यह भी है कि युवा खेती में नवीन और आधुनिक रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकें।

राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम की वीडियो कान्फ्रेंस द्वारा समीक्षा

प्रदेश में होगा वर्ष 2025 तक क्षय रोग का उन्मूलनः चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने प्रदेश में वर्ष 2025 तक क्षय रोग का उन्मूलन करने के लिए समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित कर आवश्यक कार्य करने के निर्देश दिए है। उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तक बलगम जांच की सुविधा सुनिश्चित करने के साथ ही स्वास्थ्य उपकेन्द्रों में सैम्पल कलेक्शन की सुविधा उपलब्ध करवाने के भी निर्देश दिए है।

डॉ. शर्मा सोमवार को राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम की वीडियो कान्फ्रेंस द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने क्षय रोग उन्मूलन के संबंध में राज्य एवं जिला स्तर पर किए जा रहे कार्यों की विस्तार से समीक्षा की एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

चिकित्सा मंत्री ने बताया कि विश्व के लगभग 26 प्रतिशत क्षय रोगी हमारे देश है और हमारे देश के लगभग 6 प्रतिशत क्षय रोगी राजस्थान में है। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 2030 तक विश्व को क्षय रोग से मुक्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसी क्रम में हमारे देश में वर्ष 2025 तक क्षय रोग उन्मूलन का लक्ष्य है। प्रदेश का चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग राजस्थान को इस निर्धारित अवधि में क्षय रोग से पूर्णतः मुक्त करने के लक्ष्य को लेकर कार्य कर रहा है।

डॉ. शर्मा ने बताया कि प्रदेश में प्रति माह लगभग 12 से 17 हजार बलगम के नमूने लेकर जांच की जा रही है। गत कुछ समय से कोरोना के कारण यह कार्य प्रभावित हुआ लेकिन अब पूरी क्षमता के साथ जांच व उपचार करने के निर्देश दिए गए है। उन्होंने बताया कि क्षय रोग उन्मूलन के लिए नए मरीजों को डिटेक्ट कर उन्हें समय पर गुणवता युक्त उपचार उपलब्ध करवाने पर विशेष बल दिया जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार 85 प्रतिशत रोगी लगभग 6 माह के उपचार में क्षय रोग से मुक्त हो सकते है।

चिकित्सा मंत्री ने क्षय रोग के मरीजों को ''निक्षय पोषण योजना'' के तहत उपलब्ध करवाई जा रही सहायता के बारे में विस्तार से समीक्षा की एवं सभी मरीजों के बैंक खातों में समय पर निर्धारित राशि जमा करवाना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस योजना के तहत क्षय रोग के मरीजों को 500 रूपये एवं ट्राइबल एरिया के मरीजों को 750 रूपये प्रतिमाह की सहायता राशि उपलब्ध करवाई जा रही है।

ग्राम सेवा सहकारी संस्थाओं को मज़बूत बनाने में नाबार्ड करे सहयोगः मुख्यमंत्री गहलोत

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश में सहकारिता आंदोलन को गति देने तथा सहकारी संस्थाओं को मजबूत बनाने में नाबार्ड से और अधिक सहयोग का आह्वान किया है। उन्होंने कहा है कि सहकारिता के माध्यम से प्रदेश के विकास से जुड़ी परियोजनाओं में नाबार्ड और अधिक सशक्त एवं सक्रिय भागीदारी निभा सकता है।

गहलोत से सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर नाबार्ड के चेयरमैन डॉ. जीआर चिंतला ने मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में सहकारी संस्थाओं को बढ़ावा देने तथा उनके वित्तीय सशक्तीकरण के लिए लगातार प्रयास कर रही है। उन्होंने नाबार्ड चेयरमैन से प्रदेश में ग्राम सेवा सहकारी संस्थाओं के विस्तार तथा उनके कम्प्यूटरीकरण में सहयोग के लिए कहा। साथ ही, ग्राम सेवा सहकारी समितियों के कार्य विविधिकरण पर जोर देते हुए इन्हें अन्य नवीन गतिविधियों जैसे कृषि प्रसंस्करण एवं मार्केटिंग आदि से जोड़ने के लिए नाबार्ड की योजनाओं के तहत लाभान्वित करने की बात कही। मुख्यमंत्री ने नाबार्ड का आह्वान किया कि हैण्डीक्राफ्ट्स से जुड़े लोगों एवं मसाला उत्पादकों को अपने उत्पादों का उपयुक्त दाम दिलाने के लिए राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मार्केट लिंकेज उपलब्ध कराने में नाबार्ड सहयोग करे।

गहलोत ने इस दौरान नाबार्ड से प्रदेश के लिए आधारभूत संरचनाओं के विकास हेतु प्रदत्त ऋण लक्ष्यों को 1800 करोड़ रूपए वार्षिक से बढ़ाकर 10 हजार करोड़ रूपए वार्षिक तक करने का भी आग्रह किया। इससे राज्य सरकार को सड़क, कृषि, पशुपालन एवं ग्रामीण विकास से जुड़ी योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन में मदद मिलेगी। साथ ही, एफपीओ, स्वयंसेवा सहायता समूहों को सशक्त बनाने तथा उद्यमिता विकास के लिए ऋण एवं अनुदान सहायता प्रदान करने पर भी चर्चा हुई। प्रदेश में मसाले, औषधिय पौधों एवं दलहन-तिलहन के वृहद उत्पादन के मद्देनजर कृषि प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए नाबार्ड की योजनाओं का अधिकाधिक लाभ यहां के किसानों एव उद्यमियों को दिलाने के लिए सहयोग करने को कहा। नाबार्ड चेयरमैन ने मुख्यमंत्री को बैंक के माध्यम से प्रदेश में ग्रामीण आधारभूत संरचना के विकास से जुड़ी परियोजनाओं में किए जा रहे वित्तीय सहयोग के बारे में जानकारी दी।

अलवर में दोबारा होगा रीट

देरी से पहुंचा था पेपर, ढीकवाड़ा केंद्र के 600 अभ्यर्थियों को मिलेगा मौका; शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा का ऐलान- 3 हफ्ते में होगी परीक्षा

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। अलवर में ट्रैफिक की वजह से कमला देवी महाविद्यालय केंद्र पर रीट का पेपर देरी से पहुंचा था। इसकी वजह से वहां के अभ्यर्थियों ने पहली पारी की परीक्षा देने से इनकार कर दिया था। अब शिक्षा विभाग जिला नोडल एजेंसी की मदद से अलवर के ढीकवाड़ा केंद्र पर फिर से परीक्षा का आयोजन करेगा। इसमें कमला देवी महाविद्यालय केंद्र के लगभग 600 अभ्यर्थी फिर से परीक्षा देंगे। शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा ने सोमवार को बताया कि अलवर में हाईवे पर ट्रैफिक की वजह से पेपर समय पर नहीं पहुंच पाया था। वहां मौजूद अभ्यर्थियों ने परीक्षा देने से मना कर दिया। इस दौरान वहां मौजूद अधिकारियों ने अतिरिक्त समय देने की बात भी कही। फिर भी अभ्यर्थी नहीं माने। जिला नोडल अधिकारी की देखरेख में अलवर में अगले 3 सप्ताह में फिर से रीट का आयोजन किया जाएगा। सरकारी लापरवाही की वजह से पेपर नहीं देने वाले लगभग 600 छात्र फिर से परीक्षा दे सकेंगे। शिक्षा मंत्री ने बताया कि राजस्थान में रीट सिर्फ एक परीक्षा नहीं बल्कि उत्सव बन गया था। देशभर के 25 लाख से ज्यादा अभ्यर्थी शामिल हुए हैं। ऐसे में रीट को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि राजस्थान में छिटपुट घटनाओं को छोड़ शांतिपूर्ण तरीके से परीक्षा संपन्न हुई है। ऐसे में सरकार अब लापरवाह लोगों के खिलाफ कार्रवाई की तैयारी कर रही है। ताकि दोषियों को सजा मिल सके और बेईमानों के गिरोह का भंडाफोड़ किया जा सके।

प्रशासन शहरों के संग अभियान -2021

प्रशासन शहरों के संग अभियान शहर 2021 सरकार का हाथ, जनता के साथ नगरीय विकास, आवासन एवं स्वायत्त शासन विभाग, राजस्थान

पट्टे के आवेदन हेतु ना हो परेशान

जेडीए परिसर में है समाधान

आमजन के लिए जेडीए परिसर में उपलब्ध सुविधाएं

ई-मित्र सेवा केन्द्र

सम्पूर्ण फॉर्म भरने की पूर्ण प्रक्रिया के साथ दस्तावेजों को अपलोड करवायें

मात्र 50 रुपये प्रति आवेदन

नागरिक सेवा केन्द्र

पर किसी भी दिन अपने दस्तावेजों का सत्यापन करवायें

अवकाश के दिन भी खुले हैं

हेल्प डेस्क

जहां दस्तावेजों से संबंधित समस्याओं के परामर्श हेतु कार्यालय समय (प्रात: 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक) सलाहकार मौजूद हैं

साथ ही घर बैठे जेडीए वेबसाईट

www.jda.urban.rajasthan.gov.in

पर जाकर ऑनलाइन आवेदन करें और 2 अक्टूबर से पट्टा प्राप्त करें।

जयपुर विकास प्राधिकरण

इंदिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर - 302004

राजस्थान संवाद

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर, मंगलवार, 28 सितम्बर, 2021

संपादकीय

ड्रग्स की महामारी के ख़िलाफ मुखर अभियान

भारत में छह करोड़ से भी अधिक लोगों को ड्रग्स की लत

जब कोरोना वायरस आपके किसी करीबी को संक्रमित करता है, तब आप क्या सोचते हैं? यही न कि वह व्यक्ति जल्द स्वस्थ हो, ताकि संक्रमण और न फैले। वहीं जब कोई व्यक्ति ड्रग्स यानी मादक पदार्थों का सेवन कर रहा होता है, तब आप उसे नजरअंदाज कर देते हैं! क्यों? ड्रग्स का सेवन भी तो जानलेवा है। यह भी एक महामारी है। ड्रग्स का दानव न केवल जिंदगियां और परिवार तबाह कर रहा है, बल्कि इसका काला कारोबार राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का अहम स्नेत बना हुआ है। अलगाववादी-आतंकी संगठनों के लिए यह बहुत कमाऊ खेल है। इसी समाज विरोधी और राष्ट्र विरोधी बुराई पर नकेल कसने के लिए असम में हम युद्धस्तर पर जुटे हैं। इस पूरी प्रक्रिया में स्वास्थ्य मंत्री के रूप में मेरा अनुभव बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। हमारी सरकार दृढ़ इच्छाशक्ति और सटीक रणनीति से ड्रग तस्करों पर प्रहार करने में लगी है। इसके उत्साहवर्धक नतीजे भी मिल रहे हैं। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रलय के एक सर्वेक्षण के अनुसार, देश में छह करोड़ से भी अधिक लोगों को ड्रग्स की लत लगी हुई है। इनमें भी अधिकांश किशोर और युवा हैं। यानी देश की युवा पीढ़ी को नशे का शिकार बनाकर उन्हें अपराध एवं अवसाद की दलदल में धकेला जा रहा है।

इसे ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने गत वर्ष 15 अगस्त को 'नशा मुक्त भारत अभियान' की शुरुआत की थी। इसके लिए देश के उन 272 जिलों को चुना गया, जहां सबसे ज्यादा लोग नशे की चपेट में हैं। उनमें नौ जिले असम के भी हैं। दरअसल असम की भौगोलिक स्थिति अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स तस्करों के लिए मुफीद रही है। ड्रग्स तस्करी के लिए दुनिया भर में कुख्यात 'गोल्डन ट्रायंगल' (म्यांमार, लाओस और थाइलैंड के बीच का इलाका) से नजदीक होने के कारण असम तस्करों के निशाने पर रहता है। वे असम को म्यांमार और शेष भारत के बीच एक कारिडोर के रूप में इस्तेमाल करने की फिराक में रहते हैं। ऐसी सूचना है कि प्रतिबंधित ड्रग्स की खेप मणिपुर और मिजोरम के रास्ते असम लाई जाती है। फिर यहां से दूसरे राज्यों में भेजी जाती है। अंतरराष्ट्रीय सीमा पर ड्रग्स तस्करी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है, क्योंकि यह पूर्वोत्तर में अलगाववादी संगठनों की फंडिंग का भी मुख्य स्रोत है। ड्रग्स तस्करी से होने वाली कमाई का बड़ा हिस्सा अलगाववाद की आग को भड़काने में खर्च किया जा रहा है।

ड्रग्स एंड क्राइम पर संयुक्त राष्ट्र (यूएनओडीसी) की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले साल वैश्विक अफीम उत्पादन में अफगानिस्तान का योगदान 85 प्रतिशत था। अफगानिस्तान की सत्ता पर तालिबान के काबिज होने के बाद विभिन्न एजेंसियों ने देश में ड्रग्स तस्करी बढ़ने की आशंका जताई है। इसका अर्थ है कि देश के पूर्वोत्तर और पश्चिमोत्तर दोनों छोर अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स तस्करों और राष्ट्र विरोधी संगठनों के निशाने पर हैं। सुकून देने वाली बात यही है कि इस चुनौती से निपटने के लिए हमारे पास मोदी जी और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह जी के रूप में दृढ़ इच्छाशक्ति वाला निर्णायक नेतृत्व मौजूद है।

राष्ट्र की सुरक्षा हमारे लिए सर्वोपरि है। असम के मुख्यमंत्री की शपथ ग्रहण करने के तुरंत बाद मैंने स्पष्ट कर दिया था कि राज्य में ड्रग्स के अवैध कारोबार को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। तस्करों की राष्ट्र विरोधी

गतिविधियों को समाप्त करने और नई पीढ़ी को ड्रग्स के खतरे से बचाकर विकास गतिविधियों में सहभागी बनाने के लिए हम हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। इसे सुनिश्चित करने के लिए हमने असम पुलिस को कानून के दायरे में रहकर कड़ी कार्रवाई करने की पूरी आजादी दी है। पुलिस इस आजादी का बखूबी उपयोग कर रही है। उसने ड्रग्स तस्करों के खिलाफ मुखर अभियान छेड़ रखा है। वह समन्वित तरीके से ड्रग्स माफियाओं के गिरोहों का सफाया कर रही है। कार्बी-आंगलोंग जिले में पुलिस ने जब बड़ी मात्र में ड्रग्स एवं दवाइयां बरामद कीं तो हमने न सिर्फ पुलिस की हौसला अफजाई की, बल्कि खुद जाकर उसे सार्वजनिक रूप से आग के हवाले किया। नौगांव में बड़ी मात्र में बरामद ड्रग्स पर भी हमने सार्वजनिक तौर पर बुलडोजर चलाया। इनके संदेश स्पष्ट हैं। असम ड्रग्स के अवैध कारोबार के लिए अब मुफीद ठिकाना नहीं रहेगा। इसके साथ ही पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों से समन्वय भी स्थापित किया गया है। अच्छी बात है कि इसमें सभी राज्यों का सहयोग मिल रहा है।

असम सरकार के संकल्प और मजबूत इरादों से पुलिस के अभियान को बल मिला है। आंकड़ों के आइने में इसे साफ देखा जा सकता है। मैंने इस साल 10 मई को मुख्यमंत्री पद संभाला था, तबसे 5 सितंबर 2021 के बीच प्रदेश में नारकोटिक्स एक्ट (एनडीपीएस) के तहत कुल 1250 मामले दर्ज हुए। इनमें 2162 लोगों को गिरफ्तार किया गया। साथ ही 35.5 किलो हेरोइन के अलावा बड़ी मात्र में अन्य नशीले पदार्थ जब्त हुए हैं। इनका अनुमानित बाजार मूल्य 231.31 करोड़ रुपये है। वहीं, इसी एक्ट के तहत 2020 में कुल 980 मामले दर्ज हुए थे, जिनमें 1652 लोगों की गिरफ्तारी हुई थी और 27.4 किलो हेरोइन के अलावा अन्य नशीले पदार्थ जब्त हुए थे। गोल्डन ट्रायंगल से आने वाली खेप के लिए असम को पारगमन केंद्र यानी ट्रांजिट प्वाइंट बनाने वाले तस्करों के करीब 80 फीसद नेटवर्क को नेस्तनाबूद कर दिया गया है। बचे खुचे ड्रग्स माफियाओं को भी अहसास हो जाना चाहिए कि असम में उनकी दाल नहीं गलने वाली। पुलिस उन्हें कभी भी और कहीं भी दबोच सकती है। बेहतर यही होगा कि वे या तो यह काला धंधा छोड़ दें या फिर असम से चले जाएं।

हमारा अभियान सिर्फ ड्रग्स का कारोबार खत्म करने तक ही सीमित नहीं है। हम त्रिस्तरीय रणनीति पर काम कर रहे हैं। लोगों को नशे के चंगुल से बचाने के लिए प्रदेश में व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जो युवा इसके शिकार हो चुके हैं, उनके लिए नशा मुक्ति केंद्र चलाए जा रहे हैं। हमारी कोशिश है कि ड्रग्स के कारण राह से भटके युवा फिर से सही राह पर आएं और अपने परिवार तथा प्रदेश और देश के विकास में भागीदार बनें। उन्हें समझाना ही होगा कि वे उचित उपचार और काउंसलिंग के जरिये सही होकर ड्रग्स की लत से मुक्ति पा सकते हैं। इस अभियान की पूर्ण सफलता में हमारे लिए सर्व समाज का सहयोग भी बहुत आवश्यक है।

ड्राई फास्टिंग

पानी का सेवन भी प्रतिबंधित

उपवास हमेशा लंबे समय से दुनिया भर में अलग-अलग संस्कृतियों का हिस्सा रहा है. इसने पिछले एक दशक में वजन कम करने के तरीके के रूप में केवल लोकप्रियता हासिल की है. इंटरमिटेंट फास्टिंग, जो खाने और उपवास के बीच ऑप्शनल होता है, वजन पर नजर रखने वालों और फिटनेस के प्रति उत्साही लोगों में सबसे लोकप्रिय उपवास पैटर्न है. ड्राई फास्टिंग, फास्टिंग का एक एक्सट्रीम वर्जन है जिसमें भोजन के साथ-साथ पानी का सेवन प्रतिबंधित करना शामिल है. खाने के इस तरीके से वजन घटाने में मदद करने, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करने का दावा किया जाता है.

ड्राई और इंटरमिटेंट उपवास में अंतर

इंटरमिटेंट फास्टिंग में आपको उपवास के स्टेप्स के दौरान जीरो कैलोरी वाले तरल पदार्थ लेने की अनुमति है. पानी, पतला एसीवी, बिना चीनी की कॉफी और दूध कुछ ऐसे लिक्विड ऑप्शन्स हैं जिनका सेवन उपवास के दौरान किया जा सकता है. ड्राई फास्टिंग में आपको उपवास के स्टेप्स में कोई भी फू* या लिक्विड लेने से पूरी तरह से दूर रहना होता है. इस तरह का उपवास काफी एक्सट्रीम और खतरनाक माना जाता है. लेकिन कुछ एक्सपर्ट्स एक्स्ट्रा हेल्थ बेनेफिट्स के लिए इस तरह के उपवास की पुष्टि करते हैं.

टाइप्स

ड्राई फास्टिंग को इंटरमिटेंट फास्टिंग, ऑप्शनल-डे फास्टिंग, ईट-स्टॉप-ईट या पीरियोडिक फास्टिंग के साथ आसानी से किया जा सकता है. आमतौर पर ड्राई फास्टिंग दो तरह की होती है- सॉफ्ट ड्राई फास्ट और हार्ड ड्राई फास्ट.

- **सॉफ्ट ड्राई फास्ट** : सॉफ्ट ड्राई फास्ट में, डाइटर्स को अपने दांतों को ब्रश करने, शॉवर लेने और अपने चेहरे धोने के लिए पानी का इस्तेमाल करने की परमीशन है.
- **हार्ड ड्राई फास्ट** : इस तरह के उपवास में डाइटर्स को पानी के संपर्क में आने की बिल्कुल भी परमिशन नहीं होती है.

साइड-इफेक्ट्स

लंबे समय तक फास्टिंग की स्थिति में रहने को भी कुछ साइड-इफेक्ट्स से जोड़ा गया है. अगर आप लंबे समय तक फास्टिंग रखते हैं तो बहुत बार आपको ये परेशानियां हो सकती हैं.

- **थकान महसूस होना** : शरीर में पर्याप्त ईंधन के अभाव में आपको थकान, चक्कर और कमजोरी महसूस हो सकती है.
- **सिरदर्द** : पोषक तत्वों, खास तौर से कार्बोहाइड्रेट को रेस्ट्रिक्ट करने से भी सिरदर्द हो सकता है.

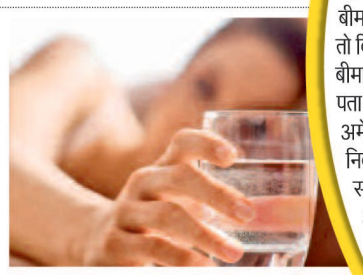

- **लगातार भूख लगना** : भोजन और पानी दोनों से परहेज करने से आपको और भी ज्यादा भूख लग सकती है और आप सामान्य से ज्यादा खाना खा सकते हैं.
- **चिड़चिड़ापन** : फास्टिंग की अवस्था के दौरान आप कर्कश महसूस कर सकते हैं और ज्यादा मूड स्विंग हो सकता है. इसके अलावा, आपका कंसन्ट्रेशन लेवल कम हो जाएगा.

एक्सट्रीम केसेज में और लंबे समय तक फास्टिंग की वजह से दौरे, मस्तिष्क की सूजन, गर्मी की चोट और गुर्दे की विफलता से भी पीड़ित हो सकते हैं.

करता है फैट बर्न

ऐसा कहा जाता है कि ड्राई फास्टिंग के दौरान जब शरीर को पानी नहीं मिलता है तो वो एनर्जी पैदा करने के लिए फैट बर्न करना शुरू कर देता है. शरीर में पानी की कमी इस पर जोर देती है और ये इंटरनल सिस्टम को चालू रखने के लिए उपलब्ध एनर्जी के हर उपलब्ध सोर्स का इस्तेमाल करना शुरू कर देता है. ये भी कहा जाता है कि ड्राई फास्टिंग डैमेज्ड सेल्स को हटाकर प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में मदद कर सकता है, जिससे शरीर नए सेल्स को फिर से पैदा कर सकता है. इसके अलावा, बार-बार फास्टिंग सूजन को कम कर सकता है और हेल्दी स्किन को बढ़ावा दे सकता है तथा इनर अवेयरनेस में सुधार कर सकता है.

कौन कर सकता है और कौन नहीं?

किसी भी तरह की पहले से मौजूद बीमारी से पीड़ित लोगों को ड्राई फास्टिंग से पूरी तरह बचना चाहिए. यहां तक कि गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को भी इस तरह के उपवास न करने की सलाह दी जाती है. एक स्वस्थ व्यक्ति को भी व्रत का ये तरीका आजमाने से पहले किसी एक्सपर्ट की राय लेनी चाहिए.

रहस्यमयी बीमारी हवाना सिंड्रोम

कोरोना महामारी की दूसरी लहर का कहर दुनियाभर में जारी है. वहीं, देश में कोरोना महामारी की तीसरी लहर का अंदेशा भी बरकरार है. इसी बीच हवाना सिंड्रोम की चर्चा तेज हो गई है. इस बीमारी का केंद्रस्थल वियतनाम है. विशेषज्ञों की मानें तो वियतनाम के हनोई में रहस्यमयी हवाना सिंड्रोम बीमारी पाई जाती है. इसके बारे में कम लोगों को ही पता है. जानकारों की मानें तो साल 2016 में क्यूबा में अमेरिकी राजनयिकों ने सिर चकराने, नाक से खून निकलने और मितली समेत कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की शिकायत की थी. उस समय लोगों ने अमेरिकी राजनयिकों की बात पर ध्यान नहीं दिया था. हालांकि, हाल के वर्षों में विश्व के कई देशों में अमेरिकी नागरिकों और काम करने वाले कर्मचारियों ने सिर चकराने और नाक से खून निकलने की शिकायत की थी. उस समय अमेरिकी सरकार ने हवाना सिंड्रोम पर गंभीरता से संज्ञान लिया. साल 2021 में जब अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने हवाना सिंड्रोम के लक्षणों के चलते वियतनाम की यात्रा को कुछ समय के लिए टाल दिया, उस समय दुनिया को हवाना सिंड्रोम के बारे में पता चला.

लक्षण

- कान में दर्द और तेज आवाज सुनाई देना
- नाक से खून बहना
- स्मरण शक्ति कमजोर होना
- मितली आना
- थकान

कारण

वर्तमान समय में हवाना सिंड्रोम के कारणों का स्पष्ट पता नहीं चला सका है. खबरों की मानें तो रेडियोफ्रीक्वेंसी, सोनिक अटैक, इंटरमॉड्यूलेशन विरूपण, कीटनाशकों के संपर्क में आने से हवाना सिंड्रोम की समस्या होती है. इस बीमारी से अमेरिकी लोग अधिक शिकार हुए हैं. इस विषय पर कई शोध किए जा रहे हैं. आने वाले समय में हवाना सिंड्रोम के कारणों का सही पता चल पाएगा.

अफ़ग़ान हाउंड्सः डॉग ब्रीड्स

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार...

बच्चों अब मैं आपको कुछ लोकप्रिय डॉग्स ब्रीड्स के बारे में बताने जा रही हूँ । सबसे पहले हम जानेंगे डॉग्स की सबसे पुरानी ब्रीड हाउण्ड्स की अलग-अलग क़िस्मों के बारे में ।

अफ़ग़ान-हाउंड्स...ये नाम सुनकर दिमाग़ का बल्ब जल गया न? जी हाँ आपने बिल्कुल सही अंदाज़ा लगाया । अफ़ग़ान-हाउण्ड्स ब्रीड अफ़ग़ानिस्तान के रफ़ पहाड़ों पर शिकार वगैरह के लिए विकसित की गई थी, जो तेंदुए या बारहसिंगा को बड़ी आसानी से चेज़ कर सकते थे।

बच्चों , एक सुनहरा वक़्त वो भी था जब अफ़ग़ानिस्तान के लोगों को खुद पर बहुत नाज़ हुआ करता था। वेस्ट ने अफ़ग़ान डॉग्स की इसी शान को भी स्वीकारा, जब विक्टोरियन-इंग्लैंड में अठारह-सौ-चौरानवे में शलीज़ादा नाम का डॉग वहाँ पहुचा। इसने तो इंग्लैंड में सनसनी सी पैदा करदी थी । इसके बाद ज़ार्दीन नामक एक और डॉग वहाँ लाया गया जिसे हर जगह इन्वाइट किया जाता था। ज़ारदीन सामाजिक रूप से इतना लोकप्रिय हुआ कि अंत में खुद क्वीन एलेक्ज़ेन्ड्रा के सामने रॉयल-पैलेस में इसे पेश किया गया था। इसके बाद से इसे हर कोई रखने की इच्छा करने लगा।

अफ़ग़ान हाउंड्स के ओनर्स इसकी शानदार लिनिएज पर बहुत गर्व करते हैं । और करें भी क्यों ना! आखिर नोआ ने अपने आर्क में फ्लड से बचाने के लिए अन्य जानवरों के साथ जिन दो डॉग्स को रखा था, वो यही तो माने जाते हैं । हालाँकि चार हज़ार सालों (बिफोर क्राइस्ट) पुरानी इस बात का कोई प्रूफ़ नहीं है लेकिन ये इसलिए भी हो सकता है क्योंकि अफ़ग़ान हाउंड्स के इतने पुराने भित्ति चित्र यानि कि 'रॉक-कार्विंग्स'मिलती हैं। वेस्ट में तो इस शानदार ब्रीड पर इसके वहाँ की मशहूर अभिनेत्री वेरोनिका लेक जैसे दिखने वाले खूबसूरत सिल्की बालों के लिए भी गर्व किया जाता है ।इनकी टॉपनॉट तक बेहद सुंदर और लंबी होती है । और कान फ्लॉपी होते हैं।इनकी हाइट तक़रीबन सत्ताइस इंच तक पहुँचती है और वज़न भी लगभग इतना ही होता है।

इसके अलावा ये डॉग्स बेहद अफेक्शनेट और बुद्धिमान होते हैं । इनमें ऐसी शक्तियां मौजूद होती हैं जो सामान्य तौर पर हम इंसानों में नहीं होतीं। इनमें एक प्रकार से 'दूसरी आँख' भी पाई जाती है जिससे ये आने वाले खतरे को सूंघ लेते हैं। तब ये अचानक से फ़्रीज़ हो जायेंगे, और कहीं शून्य में देखने लग जायेंगे , और हमें ये उस वक़्त बड़े रहस्यमय नज़र आते हैं । शायद इसलिए इन्हें 'किंग-ऑव-साइट-हाउण्ड्स' कहा जाता हो!

अफ़ग़ानिस्तान के शीत-पहाड़ों में ब्रेड किये जाने के कारण ये ठंडे प्रदेशों में आराम से सर्वाइव करते हैं। मगर अफ़सोस... अफ़ग़ानिस्तान में पैदा हुई ये डॉग-ब्रीड अब वहीं पर दुर्लभ है।

-डॉ. कविता माथुर

बच्चों में मोटापे को रोकेगा 3 रंगों वाला सलाद

बच्चों में मोटापे के बढ़ते मामले आजकल खूब देखने को मिल रहे हैं. उनकी ग्रोथ के अनुसार दिनभर में 2 बार रंगीन फलों और सब्जियों से मिश्रित ऐसा सलाद देना चाहिए जो सेहतमंद बनाए. बच्चों के लिए आप 3 रंगों वाला सलाद आजमाएं.

केसरिया सलाद

संतरा, गाजर, आम, पपीता, पेठा, भुट्टा और खुबानी जैसे केसरिया रंग के फल व सब्जियों से सलाद की प्लेट तैयार कर सकते हैं.

पोषण

इससे अल्फा-बीटा कैरोटीन मिलता है, जो कि विटामिन-ए में तब्दील हो जाता है. इस रंग के फल व सब्जियों से विटामिन-सी की पूर्ति होती है.

फायदे

इम्यूनिटी बढ़ती है, हड्डियां व जोड़ मजबूत होते हैं. आंखों व हृदय को स्वस्थ रख कैंसर की आशंका घटती है.

हरा सलाद

मटर, ब्रोकली, स्प्राउट्स, हरी पत्तेदार सब्जियां, कीवी, अंगूर, पत्तागोभी, खीरा आदि हरे रंग की सब्जियों और फल से सेहतमंद सलाद बना सकते हैं.

पोषकता

इनमें क्लोरोफिल होता है, जिससे एंटीऑक्सीडेंट मिलता है. यह विषैले तत्वों को बाहर निकालता है.

फायदे

इम्यून सिस्टम को ताकत देने के साथ नियमित सलाद खाने से पाचन से जुड़ी समस्याएं दूर होती हैं.

सफेद सलाद

केला, आलू, मशरूम, बेबी कॉर्न, शकरकंद आदि सफेद रंग के फल व सब्जियों से पौष्टिक सलाद तैयार कर सकते हैं.

पोषण

सफेद रंग के फल व सब्जियों में फ्लेवेनॉइ * और फाइटोकेमिकल्स प्रचुर मात्रा में होते हैं.

फायदे

सूजन को कम करने के साथ ही कोलेस्ट्रॉल लेवल को घटाता है. हार्मोन्स के संतुलन को बनाए रखने के साथ ही कैंसर की आशंका को कम करता है.

ध्यान रखें

बच्चे विभिन्न प्रकार के सलाद से परिचित हों, इसके लिए पहले उन्हें फल व सब्जियों के 1-2 टुकड़े ही दें. कोशिश करें कि बच्चे भी सलाद बनाने में आपकी मदद करें. सब्जियों और फल के साथ सूखे मेवे, बीज और बींस को मिलाकर इसमें प्रोटीन और फाइबर की मात्रा को दोगुना कर सकते हैं.

आजकल किडनी स्टोन यानी गुर्दे में पथरी होने की दिक्कत से बहुत सारे लोग परेशान हैं. उनकी ये दिक्कत और भी बढ़ जाती है, जब वो अनजाने में उन चीजों का सेवन कर लेते हैं, जो किडनी स्टोन के पेशेंट को बिल्कुल भी नहीं खानी चाहिए.

किडनी स्टोन है तो न करें इन चीजों का सेवन

प्रोटीन युक्त चीजें

अगर आपकी किडनी में स्टोन है तो आपको उन चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए, जिनमें प्रोटीन होता है. इनमें मांसाहार, पनीर, दही, दूध और छेने से बनी चीजें और दालें आदि चीजें शामिल हैं. ज्यादा प्रोटीन का सेवन करने से किडनी पर बुरा असर पड़ता है.

महीन बीज वाली सब्जियां और फल

किडनी के स्टोन की दिक्कत होने पर आपको ऐसी सब्जियों और फलों का सेवन बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए, जिनमें महीन बीज होते हों. इनमें टमाटर, बैगन, टैंडटी, रसभरी, ककड़ी, खीरा, अमरूद समेत कई और चीजें शामिल हैं. इनके सेवन से दिक्कत और भी ज्यादा बढ़ सकती है.

ज्यादा नमक वाला भोजन

किडनी में स्टोन की समस्या होने पर नमक का सेवन कम करना चाहिए. डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ, चाइनीज, मैक्सिकन फूड का सेवन भी नहीं करना चाहिए क्योंकि इनमें काफी मात्रा में नमक होता है.

हाई फास्फोरस वाली चीजें

हाई फास्फोरस वाली चीजें जैसे फास्ट फूड, टॉफी, जंक फूड, चिप्स, कैन सूप, चॉकलेट, नट्स, कार्बोनेटेड ड्रिंक्स, मक्खन, सोया, मूंगफली, काजू, किशमिश, मुनक्का जैसी चीजों के सेवन से बिल्कुल परहेज करना चाहिए.

खट्टे फल और कैल्शियम युक्त चीजें

संतरा, नींबू, आंवला जैसे खट्टे फलों के साथ ही कद्दू, सूखे बींस, कच्चा चावल, उड़द की दाल, सोयाबीन, अजमोद, चीकू, पालक, साबुत अनाज, चॉकलेट, टमाटर जैसी चीजों का सेवन भी आपको नहीं करना चाहिए. ये स्टोन के साइज को बढ़ा सकते हैं.

कोल्ड ड्रिंक्स

किडनी स्टोन होने की स्थिति में कोल्ड ड्रिंक पीने से परहेज करना चाहिए क्योंकि इसमें फॉस्फोरिक एसिड की मात्रा ज्यादा होती है, जो स्टोन के खतरे को और भी बढ़ा सकती है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

03

जयपुर, मंगलवार, 28 सितम्बर, 2021

जन्मदिन विशेष : 28 सितम्बर

लता मंगेशकर

भारत के भाल पर चमकता कोहिनूर

नूरजंहा जी ऐसे ही पाकिस्तान नहीं गयीं उनको लता जी के आने की आहट महसूस हो गई थी। पाकिस्तानी संगीतकारों से जब पूछा गया कि लता जी और नूरजहाँ जी में क्या फर्क है तो बेमिसाल उत्तर मिला, लता जी के स्वर संगीत की आत्मा से निकलते हैं और नूरजहां जी के सिर्फ गले से। पाकिस्तान का कोई घर ऐसा नही जहाँ भारतीय संगीत पर प्रतिबंध के बाद भी लता जी की आवाज़ नही गूंजती हो। मधुबाला के फिल्मी अनुबंध में शर्त होती थी, मेरे गीत सिर्फ लता जी ही गायेंगी। कभी चप्पल पहन कर स्टूडियो के रिकार्डिंग रूम में लता जी ने क़दम नही रखा। दिलीप कुमार का वो अल्बर्ट हाल लंदन में लता जी के स्वागत में दिया गया परिचय भाषण आज भी दोनो के अपार स्नेह का जबरदस्त उदाहरण है। भारतीय सिनेमा के त्रिदेव, दिलीप कुमार, राज कपूर और देव आनंद जिसे अपनी छोटी बहन के मानिंद प्रेम देते हो, क्रिकेट का भगवान सचिन तेंदुलकर जिसे अपनी माँ का दर्जा देता हो, वो भगवान की दी हुई ही नेमत है जिसका आज सारा हिंदुस्तान जन्मदिन मना रहा है वो लता मंगेशकर जी हैं । भूतों ना भविष्यति। 'आयेगा आने वाला' गीत ने ऐहसास दिला दिया था कि भविष्य में संगीत की दुनियां मे राज करने वाले सितारे का जन्म हो चुका है। लता मंगेशकर जी की आवाज़ जब तक संगीत है तब तक जीवित है। सभी बंधनो से मुक्त आकाश में उन्मुक्त पंछी की निश्चल उड़ान है उनकी आवाज़ धर्म और सीमाओं का बंधन तोड़ मंदिर की आरती है, मस्जिद की अजान है उनकी आवाज़। ओम जय जगदीश हरे भी है और बेकस पे करम कीजिये सरकारे मदीना भी है उनकी आवाज़। क्या नहीं गाया आपने , आपने तो ईश्वर तेरो नाम अल्लाह तेरो नाम भी गाया, हम ही नासमझ रहे, समझ नहीं पाये। मैंने बचपन से लेकर आज तक आपको को ही सुना और देखा भी, जब जयपुर में आपने 'यशोदा का नंदलाला' गीत से शुरुआत की। दूर दूर तक मिठास और आपके कानो के बूंदों की चमक, सब कुछ याद है जैसे कल की बात हो। मेरा प्रणाम आपको। दीर्घजीवी हो यही कामना है। आवाज़ की खुशबू तो महक रही है और नाम की ज़रूरत नहीं आपको, आपकी आवाज़ ही पहचान है...

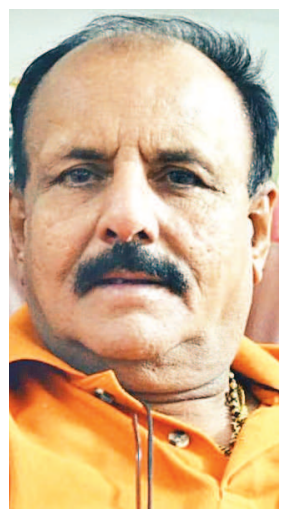

बंसत व्यास
जयपुर

ये एक फ़िल्म की शूटिंग के समय का दुर्लभ चित्र है जिसमें खाली समय में संगीतकार अनिल बिस्वास जी और अभिनेत्री कुमकुम जी खाना बना रही हैं । लता मंगेशकर जी उनके पास बैठी है। इस दृश्य से पता लगता है कि सबकुछ इतना आसान नहीं था उस समय भी लेकिन लता जी ने अपना मुक़ाम हासिल किया और इस क़दर किया कि संसार के हर दिल पर राज करतीं हैं आज।

लघु कथा

किश्त...

सपना चन्द्रा
कहलगाँव, भागलपुर बिहार

'लता!', पिताजी को मैं ले आया हूं, उन्हें नाश्ता पानी करवाकर वो बात कर लेना..!'

मै अब आफिस जा रहा हूं ,शाम को देर से लौटूंगा..!

'मुझे बता देना, बातचीत का क्या नतीजा रहा..!'

'पापा!', आप अपना ध्यान नही रखते हैं देखिए तो कपड़ों मे वो चमक भी नही है।'

'आपके कपड़े भी अब खास से आम हो गये।'

'अरे नहीं नहीं बेटा!, क्या बात है बता?'

'तुम्हें कुछ चाहिए होता है तभी इतनी बारीक़ी से मेरे कपड़ों के लिए कहती है।'

'नहीं नहीं पापा!, कुछ भी तो नहीं चाहिए, सब कुछ तो दे दिया आपने शादी में।'

'सच कह रही हो न,सब ठीक है न बेटा?'

'हां हां पापा!, आप आराम करें सफर में थक गये होंगे।'

लता अपने पति के कॉल से परेशान हो रही थी, क्योंकि वह पिता के थके चेहरे को देख कुछ कह नही पाई।

शाम में ...

'लता!, हां, पिताजी से बात हुई.?'

'कुछ पुछ रहा हूं बोलती क्यों नही.?'

'जी नही,पिताजी खुद ही परेशान है उन्हें कैसे बतांऊ?'

'तुमसे एक काम नही हो पाया ,मै ही बात कर लेता हूं।'

लता ने पैर पकड़ लिए ,भगवान के लिए ऐसा मत किजिए।

'छोड़ो!', झल्लाते हुए रमेश ने लता को एक तरफ कर दिया।

'दो साल की ही तो बात थी एफडी पर मिलने वाले ब्याज को हमे दे सकते है।'

'अब उन्हें क्या करना है, पेंशन की रकम काफी नही है ?'

'इतना कुछ तो पापा ने दिया है ,ब्याज वाली रकम से अपनी लोन की किश्त चूका रहे है हमे कैसे दे सकते है?'

'हमारी किश्त का क्या..?'

'आपकी किश्त'

'मै जो फ्लैट ले रहा हूं क्या तुम उसमें नही रहोगी...?'

क्या!'

'सही सुन रही हो मैडम!' आपको अपने लिए तो किश्त चुकानी पड़ेगी..!

दूसरे कमरे में आराम कर रहे पिता की नींद हराम हो गई थी..!

कार्यालय संवाददाता

विद्वता के अहंकार से परे, अंग्रेजियत के अभिमान से मुक्त महान कवियत्री और सामाजिक विज्ञानी

श्रीमती कमला भसीन

जयपुर। श्रीमती कमला भसीन जी का जन्म 24 अप्रैल 1946 में हुआ था और 25 सितम्बर 2021 को वे हमारे बीच नहीं रहीं। वे एक भारतीय विकास नारीवादी कार्यकर्ता कवयित्री, लेखिका तथा सामाजिक विज्ञानी थीं। वे राजस्थान की पूर्व पर्यटन मंत्री श्रीमती बीना काक की बहन थीं। श्रीमती भसीन जी ने लिंगभेद, शिक्षा, मानवीय विकास और मीडिया में बहुत काम किया। वे नई दिल्ली भारत में निवास करती थीं। उन्होंने अपने एनजीओ 'संगत' जो कि नारीवादी साउथ एशियन नैटवर्क का हिस्सा है और अपनी प्रसिद्ध कविता 'क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है' के कारण एक अलग पहचान बनाई। भारत के ग्रामीण और शहरी ग़रीबों को मज़बूत करने के लिए उन्होंने 1972 में राजस्थान में एक स्वैछिक संगठन की शुरुआत की । बाद में वे युनाइटेड नेशंस फ़ूड एंड एग्रीकल्चरल ऑर्गनाइज़ेशन (एफ़एओ) के एनजीओ दक्षिण एशिया प्रोग्राम से जुड़ी जहाँ उन्होंने 27 साल तक काम किया। साउथ एशिया में फेमिनिज्म मूवमेंट को रफ्तार देने में इनकी अहम भूमिका थी। श्रीमती कमला भसीन एलीट नारीवादियों लेखिकाओं से अलग थीं। उनके अंदर हर औरत के लिए करुणा थी, प्रेम था। विद्वता के अहंकार से परे, अंग्रेजियत के अभिमान से मुक्त, वह बहुत सहज थीं। उनके जीवन, संघर्ष, और लिखाई में कोई फर्क नहीं था। वह आजीवन लड़ती रहीं। भारत देश को नई दिशा देने में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। देश उनके इस योगदान के लिए उन्हें हमेशा याद रखेगा।

श्रद्धाजंलि...

हिलव्यू समाचार परिवार इनके परिवार जनों को संवेदना प्रकट करता है एवं श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

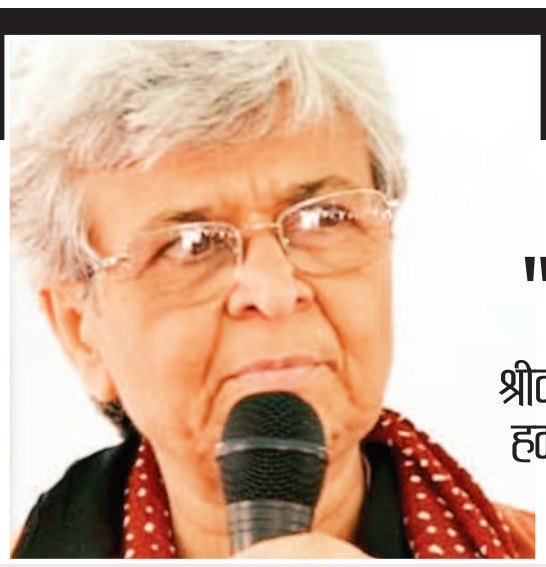

"स्मरण"

श्रीमती कमला भसीन
हमारी कम्मो दीदी....

जिन्होंने बचपन से हमें स्नेह दिया है। बेहद प्यार किया है वे आज हमारे बीच नहीं रही हैं लेकिन उनका जाना भी मेरे लिये किसी हैरानी से कम नहीं था ।

20 सितंबर की रात को मैं ने ख़्वाब में अपने मरहूम डैडी साहिब और अम्मी को देखा और अपनी सगी बहिनों जैसा वुजूद रखने वाली कम्मो दीदी और बीना जी को भी ख़्वाब में देखा।

मैंने ख़्वाब में देखा कि कम्मो दीदी के कपड़ों पर कुछ गंदगी लगी हुई थी वे लड़खड़ाते हुए चल रही थीं मैं उन्हें सम्भालने का प्रयास करता हूँ । सुबह उठते ही मुझे बैचेनी महसूस हुई। मैंने बीना जी से लंबे अरसे के बाद फ़ोन से बात की थी। मैंने उन्हें अपने ख़्वाब के बारे में बताया उन्होंने बताया कि वे रात भर सफ़र करती हुई दिल्ली पहुँची हैं और कम्मो दीदी के पास ही हैं कम्मो दीदी की हालत बेहद नाज़ुक बताई उन्होंने। कम्मो दीदी का जाना हमारे लिये बेहद बड़ा सदमा है। उनकी आत्मा की शांति के लिये हमारी दुआ रहेगी ,वो हमेशा हमारी यादों में ताज़ा रहेंगी । कम्मो दीदी जब भी मिली हैं बड़ी बहिन की तरह ही उनका स्नेह रहा है ,आज भी उनके लिखे ख़त मेरे पास बहुत क़ीमती दस्तावेज की तरह महफ़ूज़ हैं अब उनकी यादें भी ताउम्र जहन में महफ़ूज़ रहेंगी। अल्लाह उन्हें जन्नत अता करें...आमीन

-रिज़वान एजाज़ी

ईशमधु तलवार

कथाकार, वरिष्ठ पत्रकार,
कला व साहित्य जगत का जाना माना नाम...

जयपुर के जाने माने कथाकार,वरिष्ठ पत्रकार एवं कला व साहित्य से जुड़े श्री ईशमधु तलवार 17 सितम्बर 2021 को हमारे बीच नहीं रहे। यूको बैंक, राजस्थान ने हिंदी दिवस के मौके पर वरिष्ठ साहित्यकार विजयदान देथा की स्मृति में 'विजयदान देथा भाषा सेतु सम्मान' शुरू किया यह पहला सम्मान श्री ईशमधु तलवार को दिया गया था। राजस्थान ही नहीं बल्कि देश की हिंदी पत्रकारिता में श्री ईशमधु तलवार एक चर्चित नाम थे। राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर, ईटीवी सहित कई प्रमुख समाचार पत्रों और इलैक्ट्रोनिक मीडिया संस्थानों में विभिन्न पदों पर उन्होंने लंबे समय तक अपनी सेवाएं दीं। ईशमधु कई राज्य और राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित हो चुके हैं । श्री ईशमधु तलवार पिंक सिटी प्रेस क्लब के तीन बार अध्यक्ष रह चुके हैं। इसके साथ ही वे राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के भी दो बार अध्यक्ष रहे हैं। फिल्म जगत के बिसरा दिए गए संगीतकार दान सिंह पर लिखी उनकी किताब 'वो तेरे प्यार का ग़म' और देश-विभाजन के दर्द को अलहदा अंदाज में प्रस्तुत करने वाला उनका उपन्यास ' रिनाला खुर्द' बहुत प्रसिद्ध हुआ। पत्रकारिता जगत एवम साहित्य जगत के लिए यह एक बड़ी क्षति है।

भव्य सोनी

कवि लेखक,
ग़ज़लकार और
मोटिवेशनल स्पीकर

भव्य सोनी जयपुर के जाने माने मोटिवेशनल स्पीकर एवं ग़ज़ल, शायरी और काव्य लेखन से साहित्य जगत में अपनी भव्यता स्थापित करने वाले युवा कवि भव्य सोनी 22 सितम्बर 2021 को हमारे बीच नहीं रहें। साहित्य जगत में यह एक अपूरणीय क्षति है।

बैठ कर ख़ामोश तन्हा हमने बस इतना किया,
इक सिरे को खींच कर अपनी गवानें खोल दीं...

भव्य सोनी

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

04

जयपुर, मंगलवार, 28 सितम्बर, 2021

कविता

एक थे लाल एक थे बापू...

एक थे लाल और एक थे बापू,
कहाँ हैं अब ऐसे लाल और बापू,
दोनों ने जीवन ,सर्वस्व किया, नौछावर,
अपनी इस जननी की खातिर,
आओ मिलकर दिया जलाएं,
जन्मदिन उनका मनाएँ,
सुख ,समृधि का जो देखा उन्होंने सपना,
उसको पूरा करने का क्यों न ले प्रण अपना।
प्यारे बापू प्यारे शास्त्री जी,
धन्यभाग हमारे,
जो हम इस धरती पर आए,
जहां ऐसे कर्णधार हमने हैं पाये।
अपने कर्मठ अमर सपूतों को,
उनके पसीने की एक एक बूंदों को
क्यों न याद करे हम दोनों को,
भावविह्वलहोकर दोनों को
इस धरा के अमर सपूतों को,
एक ने बोला जय जवान-जय किसान,
दूसरे बोले रघुपति राघव राजा राम
दोनों की थी एक ही बोली,
देश हमारा खेले होली(रंगों की),
क्यों न बोलें हम ये आज,
भारत, बन जाए हम सबकी शान...

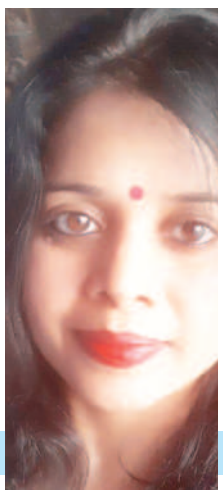

प्रिया अग्रवाल, सूरत (गुजरात)

गाँधी गीत...

प्रकट हुए ऐसे समय में आई थी जब आँधी।
महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी।।

सत्य अहिंसा धर्म के वो पुजारी थे।
मानव तन में वो एक अवतारी थे।
अंग्रेजो को परास्त करके बना दिया समाधी
महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी।।

भारत माँ को आज़ाद कराने को संकल्पित थे।
तन से, मन से, धन से, वो पूरा समर्पित थे।
15 अगस्त सन सैंतालीस को मिल ही गई आज़ादी।
महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी।।

हम सबको आज़ाद कराया,मुक्त कराया।
नयी मनुजता को फिर से जीवंत कराया।
रविन्द्र नाथ ने उनको दिया महात्मा की उपाधी
महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी।।

प्रकट हुए ऐसे समय में आई थी जब आँधी।
महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी महात्मा गाँधी।।

रविकान्त पाण्डेय (वाराणसी)

योग से जीवन धन्य करें

सब मिलजुल कर योग करें,अपना जीवन धन्य करें ।
योग से सब लोग दूर हो रहे बच्चे बूढ़े और जवान,
मोबाइल सब चिपक गए जैसे हो ये उनकी जान।
मिलने का अब टाइम नहीं हैं कैसे योग की बात करें,
सब मिलजुल कर योग करें,अपना जीवन धन्य करें।।।

दूर हो रहे माँ बाप से बच्चे दूरियाँ अब तो बढ़ती जाएं,
पापा पर है काम का प्रेशर ,मम्मी कैसे ध्यान लगाएं ?
नव युवा बेचैन बहुत है किससे मन की बात करें ,
सब मिलजुल कर योग करें,अपना जीवन धन्य करें।2।

दूर होगी ये बेचैनी काम का प्रेशर होगा कम
प्रति दिन मिलकर योग करें निरोग रहेगें हम ।
योगध्यान,व्यायाम क्रिया कीहम सब मिलकर बातकरें
सब मिलजुल कर योग करें,अपना जीवन धन्य करें।3।

योग ध्यान व्यायाम क्रिया में शक्ति है अपरंपार ,
इसको निस दिनअपनाने से ना होए कोई बीमार।
योग ध्यान व्यायाम क्रिया से अपने मन को शुद्ध करें,
सब मिलजुल कर योग करें, अपनाजीवन धन्य करें ।4।

डॉ कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
जालौन (उत्तर प्रदेश)

तीन दिवसीय छठे जयपुर देव फैस्टिवल के अंतिम दिन रू-ब-रू हुए गीतकार जावेद अख़्तर, बोले...

'लोग वो याद रहते हैं जो सबक दे जाते हैं'

जावेद अख़्तर और पं. विश्वमोहन भट्ट ने वीडियो संदेश क जरिए साझा किए देवानंद के व्यक्तित्व पर अपने विचार

कला समीक्षक सर्वेश भट्ट को दिया गया 'देवानंद सांस्कृतिक लेखन अवार्ड'

धर्मेन्द्र छाबड़ा, नीलम शर्मा और सीमा मुंजाल ने सजाई गीतों भरी शाम

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। शहर के मंचों पर पिछले पांच साल से आयोजित होता आ रहा जयपुर देव फैस्टिवल अपनी छठी पायदान पर इस बार भी ऑनलाइन आयोजित किया गया। तीन दिवसीय समारोह के तीसरे और अंतिम दिन का मुख्य आकर्षण गीतकार जावेद अख्तर, देवानंद के पुत्र सुनील आनंद और पद्मभूषण पं. विश्व मोहन भट्ट के के संदेश रहे। छाबड़ा बैंक्वेट हॉल में सीमित दर्शकों के साथ ऑनलाइन हुए समारोह को वीडियो संदेश के जरिए संबोधित करते हुए गीतकार जावेद अख़्तर ने कहा कि लोग वो याद रहते हैं जो सबक दे जाते हैं। देवानंद ऐसे ही कृतित्व के धनी थे जो आने वाले पीढ़ि के लिए मेहनत, लगन और सत्यनिष्ठा के परिचायक बन गए। उनका व्यक्तित्व इस प्रकार था जिसे सारा हिन्दुस्तान जीता था और आज भी जीने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने अपनी फिल्मों में आधुनिकता का तो पूरा समावेश किया लेकिन शालीनता का पूरा ध्यान रखा।

समारोह के संयोजक रवि कामरा ने बताया कि इससे पूर्व समारोह में पद्मभूषण पं. विश्व मोहन भट्ट का भी वीडियो संदेश दिखाया गया जिसमें भट्ट ने देवानंद के साथ बिताए पलों का जिक्र किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी गोविंद शर्मा ने इस मौके पर देवानंद के पुत्र सुनील आनंद के भेजे संदेश को पढ़कर सुनाया।

सजी गीतों भरी शाम: इस मौके देवानंद और हेमंत कुमार सुपरहिट गीतों की शाम भी आयोजित की गई। इसमें धर्मेंद्र छाबड़ा, नीलम शर्मा और सीमा मुंजाल ने दोनों शख्सियतों के कुछ सुपर हिट गीतों को अपनी आवाज दी।

पहला देवानंद सांस्कृतिक लेखन अवार्ड दिया गया : समारोह के संयोजक रवि कामरा ने बताया कि इस साल से प्रदेश में सांस्कृतिक और साहित्यक लेखन में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्ति को देवानंद की स्मृति में 'देवानंद सांस्कृतिक लेखन अवार्ड' दिए जाने का निर्णय किया गया है। इस बार का देवानंद सांस्कृतिक लेखन अवार्ड प्रदेश के वरिष्ठ कला समीक्षक और संस्कृतिकर्मी सर्वेश भट्ट को दिया गया। भट्ट को ये सम्मान संस्कृति कर्मी अजय चोपड़ा, फिल्म डिस्ट्रिबूटर राज बंसल और भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी महेंद्र सुरणा ने प्रदान किया. कामरा ने बताया कि 2019 में कोरोना से पहले ये समारोह जवाहर कला केंद्र में पूरे दिन आयोजित किया गया था। इसमें फिल्म अभिनेत्री जीनत अमान ने भी शिरकत थी, इस दौरान जीनत को पहले देवानंद अवार्ड से नवाजा गया था।

व्यंग्य...

ब्रांडेड -ब्रांडेड

आज ज्यादातर बंदो के माइंड में ब्रांडेड का नकेल कसा गया है। बस दिल ब्रांडेड-ब्रांडेड कर रहा है। मध्यम वर्ग की जेब फटी लेकिन ब्रांडेड शो रूम में भीड़ डटी। आश्चर्य की बात है। गांव में भी मिनरल वाटर की खपत बड़ी तेजी से बढ़ी है। अभी हाल में ही कहीं पढ़ा था कि फलाने क्रिकेटर ब्लैक वाटर पीते हैं जो एक लीटर करीब चार हजार रुपए का मिलता है। काफी फायदा घुमाकर लपेटा गया था। पढ़ने वाले भी उस आफत की चाहत में मरे जा रहे हैं। स्टार लोगों का क्या है? कोई खाके मरे उन्हें क्या उनके घर पान मसाला एड से पैसा आ रहा तो वह चुकेंगे नहीं। सरकार मोबाइल पर उनकी जागरूकता की रिंग सुना रही जिससे लोग खौफ कम खाते है क्योंकि रमला फसंद खाते है। मुंह में गजनीगंधा तो मुट्ठी में दुनिया का हर धंधा। तब क्यों काम करे बंदा। इसमें भी विकास के जन्म की कथा एंगल दिख रहा कुछ नज़रदोष बंदो को,मोई हैं तो मुमकिन है। प्रदेश में जोई हैं तो सड़के चमक रही हैं जबकि उनमें चेचक सा गहरा दाग नहीं दिख रहा। विकास के ब्रांडेड चश्मा रूपी वाशिंग पाउडर से धो रखा है। भ्रष्टाचार करेंगे तब न कहेंगे कि दाग अच्छे हैं।

समाज में अजब-गजब ब्रांडेड खेला देखने को मिलता है। अपने रहते सुखाइल घसीटाराम और बीवी चाहिए जन्नत से आई हूर। उनको पता नहीं कुछ खुराफाती बीवियों ने अपने पतियों को मृत्युलोक में ही जहन्नुम दिखा दिया। अब बेचारे हाय तौबा-हाय तौबा माफ़ी दे दो चिल्ला रहे। यह मानवीय ब्रांडेड पीस का साइड इफेक्ट है जो रिएक्शन लड्डू खाने के तुरंत बाद नहीं बल्कि दीर्घकालीन भयंकर परिणाम देता है। यह चुटकुले नहीं है ब्रांडेड बकैती है जो रुला देती है।

रिश्तेदारी में किसी छोटी लड़की का बर्थडे आया तो ज्यादा लोगों की ब्रांड बन चुकी भेदरूपी मानसिकता में लड़की के लिए गिफ्ट आईटम बस किचेन सेट देकर चूल्हा-चौका का छौक लगाया जाता है।लड़कियों की इच्छा को दबाया जाता है। धर्म का सहारा उनके कमजोर कंधों पर डाला जाता जिसके बोझ से वह झुक जाती हैं। मेरा फलाना मजहब उनके धर्म से ब्रांडेड है का फरेब में उलझाया जाता है। समाज में लड़का-लड़की का अलग-अलग ब्रांड में बांटा जाता है। इसलिए लड़की को सस्ता ब्रांड समझा जाता है। स्टेरियो टाइप इमेज वालों से सावधान,उनकी कुंठित सोच लड़कियों को उन्मुक्त उड़ने में डालते हैं व्यवधान। कैसे संस्कारी विचारों के मठधीश हैं जो महिला या लड़की के पहनावे से उनका ब्रम्हचर्य का व्रत टूटता है और दरिंदा में परिवर्तित हो जाता है। अनर्गल बयानी वाले संस्कारिक पुरुष फिर मासूम बच्चियों से हैवानियत कैसे हो जाती? जवाब कहाँ से दोगे अपनी दोहरी मानसिकता रूपी को लादे जाम्बी बनकर घूम रहे।

लड़को को संस्कार कब दोगे कि वह अपनी माँ बहन का पोषण करें और पराई जानकर भी शोषण न करें। अपने पुरुषार्थ पर अडिग रहना न कि खुली बदन लड़की नज़र में आई डिग गया संस्कार और समाज के सामने भड़ास।

ब्रांडेड का चक्कर देश को कलंकित कर रहा। जाति भी ब्रांडेड है क्योंकि उनका माइंड डेड है। माइंड डेड है तो राजनीति में उथल-पुथल का समतल पैड है। भेड़ों के झुण्ड की तरह आराम से किसी भी जाति का नेता ब्रांडेड चरवाहा बनकर वोट की घास से नोट चर रहा। भेड़ों सा अँधेरी कूप में गिर कर त्राहिमाम-त्राहिमाम पांच साल चिल्ला रहा। कूप में ही आवाज गूँजता बाहर नहीं। पांच साल बाद नया नायक फिर पीठ में छुरा भोंकने को तैयारी कर रहा। जाति-पाति से बाय-बाय कहने वाले फायर ब्रांड हर थाने में अपनी कुंठित सोच को उजागर कर दिए। अपने-अपने जाति का ब्रांड का झंडा लिए झंडाबदार बैमनष्यता का विष घोलता जिससे राजनीति कुर्सी हासिल की जाए। यह देख मानवता सिसकती।विकास से ध्यान हटा और दुर्घटना घटा। केंद्रीय और क्षेत्रीय पार्टियां सब मिलकर जाति कार्ड और मजहबी कार्ड अपनी-अपनी पोटली से निकाल, ब्रांडेड-ब्रांडेड पॉलिटिक्स खेलतीं लेकिन देश इसका रिस्क उठाता और खामियाजा भुगतता।

सूर्यदीप कुशवाहा,
वाराणसी हिंदी अकादमी,
मुंबई से सम्मानित

प्रकृति की पुकार

प्रकृति अमूल्य है। हमें बहुत कुछ देती है। जिसका कोई मोल नहीं लेती है। यह बात अस्पताल में कई मरीज बीमारी के दौरान जान पाए हैं। 10 दिन के इलाज में ऑक्सीजन के 50000 रुपए तक खर्च करने पड़े हैं। यही ऑक्सीजन प्रकृति हमें मुफ्त में देती है। जिसका कोई मोल नहीं लेती है। यह हमारे लिए सबसे अनमोल उपहार है।

तालाबंदी यानी लॉकडाउन के इसी दौर में नदियां स्वतः ही शुद्ध हुई हैं। हम लाखों रुपए खर्च कर उसे शुद्ध नहीं कर पाए थे। मगर तालाबंदी यानी लॉकडाउन ने इसे संभव कर दिया। कल-कल करती गंगा साफ-सुथरी हो गई। उसकी स्वच्छता अद्भुत थी। मगर तालाबंदी खत्म होते ही नदिया पुनः गंदी होना शुरू हो गई है।

सामान्य दिनों में हमें दूर की चीजें साफ दिखाई नहीं देती हैं। तालाबंदी ने ही वायु को शुद्ध कर दिया था। हवा में तैरती गंदगी कम हो गई थी। बहुत दूर की चीजें साफ दिखाई देने लगी थीं।

यह सब हमारी प्रकृति के बदलते स्वरूप के कारण संभव हुआ था। तालाबंदी के दौरान वाहन बंद हो गए थे। ध्वनि और वायु प्रदूषण कम हो गया था। इसका असर प्रकृति पर दिखने लगा था।

कोरोना जैसी महामारी के कारण मानव समुदाय पर आए घोर संकट के दौर में प्रकृति की पुकार को पाती अपनों को मुहिम के संयोजक डॉ सूरजसिंह नेगी ने सुना और महसूस किया। उनके मन में 5 जून 2020के दिन यानी विश्व पर्यावरण दिवस पर यही पुकार मस्तिष्क में गूंजी। तब उन्होंने भूली-बिसरी यादें पाती को पुनर्जीवित करने वाली अपनी मुहिम में इसी प्रकृति की पुकार को भी अपना अभियान बनाया।

स्मरण रहे कि नेगी जी और उनकी सहधर्मिणी डॉ मीना सिरोला ने अखिल भारतीय स्तर की पाती प्रतियोगिता की मुहिम चला रखी है। जिसमें कई विद्यालय के छात्र, अनेक कनिष्ठ और वरिष्ठ रचनाकार भागीदारी निभाते हुए सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने इसी अभियान में 'प्रकृति की पाती मानव के नाम' को शामिल करते है प्रतियोगिता आयोजित की। ताकि मानव मन प्रकृति की पुकार को सुन सके और हम मानव अपने-अपने स्तर पर उसकी आवाज सुनकर उसे सजा और संवार सकें।

बस! इसी को पाती प्रतियोगिता के रूप में रूपांतरित किया गया।प्रतियोगिता को कनिष्ठ और वरिष्ठ- दो वर्ग में बांटा गया।फलस्वरूप इस प्रतियोगिता को अच्छा प्रतिसाद मिला। 250 से अधिक पत्रों में से 118 पत्रों का चयन कर 'प्रकृति की पुकार' नामक पुस्तक में चयनित पत्रों को स्थान दिया गया।

प्रस्तुत पुस्तक में संग्रहित हरेक पाती अनोखे और अलग अंदाज में लिखी गई है। प्रकृति ने रचनाकार को आत्मसात कर मानव के नाम अनोखी पाती लिखी है। इसमें कई रंग, कई भाव, कई भंगिमा और कई आयाम प्रस्तुत किए गए हैं। जिसमें विविध रंग भरे हुए हैं। यह सब रंग हमें भातें और सुहाते हैं। साथ ही रुचिका लगते हैं। बस पढ़ने, गुनने और महसूस करने की जरूरत है।

प्रस्तुत पुस्तक उसी पाती मुहिम का अंग है। इसमें रचनाकारों द्वारा प्रकृति की पाती मानव के नाम लिखी गई है। इसी में प्रकृति अपने मन की बात, मानव के द्वारा कह रही है।

आज की आवश्यकता को देखते हुए 'प्रकृति की पुकार' बहुत ही आवश्यक पुस्तक है। इसका संपादन सूरजसिंह नेगी व डॉक्टर मीना सिरोला ने किया है। पुस्तक का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। त्रुटि रहित छपाई, बेहतरीन आवरण पृष्ठ, ऊत्तम साजसज्जा, हार्डकवर बाइंडिंग और 340 पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य 500 रुपए वाजिब है। प्रकृति व मानव की भलाई की दृष्टि से यह बहुत ही उपयोगी पुस्तक है। जिसे समस्त रचनाकारों को ससम्मान भेंट किया गया है। यह पुस्तक सभी के लिए अनुपम उपहार है।

आशा है कोरोना काल में देखी व महसूस की गई विसंगतियों को दूर करने के लिए इस पुस्तक का सभी हार्दिक स्वागत करेंगे। ऐसा विश्वास है। इस पुस्तक के संयोजन के लिए सभी बधाई के पात्र हैं।

ओमप्रकाश क्षत्रिय
'प्रकाश'
रतनगढ़, नीमच
मध्यप्रदेश

प्राण-प्रिय...

अधरों पर कुसुमित प्रीत- परिणय
केशों में आलोकित सांध्य मधुमय
चिर- प्रफुल्लित कोमल किसलय
दिव्य-ज्योति जैसी मेरी प्राण-प्रिय...

दृगों से प्रवाहित होता रहता हाला
वो मेरी मधुकलश वोही मधुशाला
मृग- पदों से कुचालें भरती बाला
प्राण - घटकों की उष्मित दुःशाला...

ब्रह्माण्ड की नव- नूतन कोमल काया
मरूभूमि में आच्छादित शीतल छाया
व्योम की मस्तक पर आह्लादित माया
मनभावन मुस्कान की वो सरमाया...

विटपों के अंगों पर जैसे कोई चित्रकारी
वायु के बाहुबलों पर द्रुत वेग की सवारी
चहुँ दिशाओं की वो एक-मात्र पैरोकारी
वो ही रम्भा-मेनका, वो ही फूल कुमारी

भाव-भंगिमा में देवी का अवतरण
कवि के कविता का नया संस्मरण
किसी किताब का प्रथम उद्धरण
जिस्म से जवान, ख़्यालों से बचपन...

जो भी शांतचित्त हो देख ले, विस्मित हो जाए
इहलोक में विलीन हो जाए, चकित हो जाए
खड़ी बोली से देवों की बोली संस्कृत हो जाए
किसी देवालय के प्रांगण सा झंकृत हो जाए...

उसके आगमन से जीवन में इष्ट पा लिया
अपने उपेक्षित मन का परिशिष्ट पा लिया
किसी अरुंधति ने अपना वशिष्ठ पा लिया
मूक अक्षरों ने साकार होता पृष्ठ पा लिया...

तुम्हारे होने से अपने सुकर्मों का ज्ञान हुआ
शील और सौम्य परिणति का प्रमाण हुआ
साधारण जीवात्मा सा जीव, मैं महान हुआ
असफलता से सफलता का सोपान हुआ...

शीश झुका का प्रतिदिन ईश-वंदन करता हूँ
अवतरित महिमा का अभिनन्दन करता हूँ
इस अनुकम्पा का बारम्बार भंजन करता हूँ
मेरी प्राण-प्रिय, तुम्हारा अनुनन्दन करता हूँ ...

मेरे सजीव होने का अनुपम आधार हो तुम
मैं जिस मंझधार में था,उसकी पतवार हो तुम
मैं तो बस लेशमात्र हूँ,मेरा सारा संसार हो तुम
हे प्राण-प्रिय,मेरी जीवटता का आह्वान हो तुम...

सलिल सरोज,
कार्यकारी अधिकारी
लोक सभा सचिवालय,संसद भवन, नई दिल्ली

"है ये कैसा सफ़र"

"ज़िंदगी का सफ़र है ये कैसा सफ़र कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं, है ये कैसी डगर चलते है सब मगर कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं" इस गाने के बोल को समझे तो बहुत कुछ समझाता है हम इंसानों को।

सफ़र सिर्फ़ ट्रेन या बस में एक जगह से दूसरी जगह जाने का नाम नहीं। जन्म से लेकर मृत्यु तक उम्र काटकर पहुँचना भी एक सफ़र है। स्वाच्छोश्वास का आवागमन मुसाफ़िर जैसा ही है एक श्वास आती है, एक विदा लेती है। इस अविरत बहती क्रिया के सफ़र में देखने लायक और अनुभव करने लायक कई पड़ाव आते है। चुनौतियां, संघर्ष, सुख-दुःख और सबसे बड़ा पड़ाव रिश्तों की चौसर।

भूलभूलैया सी ज़िंदगी में ये चौसर को समझना बहुत कठिन है। इंसान का दिमाग फैक्ट्री है षड्यंत्र की कब कौनसा दाव खेलकर रिश्ते हमारी ऊँगलियों से गिरह खोलकर निकल ले पता ही नहीं चलता।

इस सफ़र में हम बेखौफ़ चलते जाते है देखने वाली बात ये है, न मंज़िल का पता होता है, न जहाँ पहुँचना है उस जगह के बारे में कुछ जानते है। ग्रंथों के भीतर शब्दों की मायाजाल से रचे विचारों का अनुसरण करते बस इतना जानते है कि मृत्यु हमारी आख़री मंज़िल है। पर मृत्यु की सच्चाई कोई नहीं पहचान पाया है।

हर एक तन को मिट्टी में मिल जाना है, हर कोई ज़िंदगी के सफ़र का प्रवासी है कब किसकी ट्रेन मृत्यु के रुप में आएगी कोई नहीं जानता, न दिन का पता न समय का। किसी एक लम्हें पर हर किसीका नाम लिखा होता है।

ये निश्चित है फिर भी इस सफ़र में इंसान एक दूसरे को समझते, हाथ थामकर चार कदम नहीं चल सकते। एक दूसरे के प्रति बैर, नफ़रत, इर्ष्या और धर्मांधता पाले सफ़र का मज़ा किरकिरा कर लेते है। जब कि सबका आख़री स्टेशन एक है। क्यूँ न ज़िंदगी के सफ़र में आने वाले हर पड़ाव पर ठहरकर ज़िंदगी की सुंदरता को महसूस करते सफ़र का आनंद लिया जाए।

गर जीना आए तो ज़िंदगी जश्न है उम्र का सफ़र हंसी खुशी तय करते कटे तो मज़ा है बाकी जन्म भले लिया फेरा फोगट है।

आख़िर में इसी गाने का अंतरा जीवन में उतार ले तो जीवन सफल है।

"ज़िंदगी को बहुत प्यार हमने किया मौत से भी मोहब्बत निभाएंगे हम, रोते रोते ज़माने में आए मगर हंसते हंसते ज़माने से जाएंगे हम" पर हंसते-हंसते तभी जाएंगे जब सफ़र का सही मज़ा लिया हो।

भावना ठाकर, बेंगुलूरु

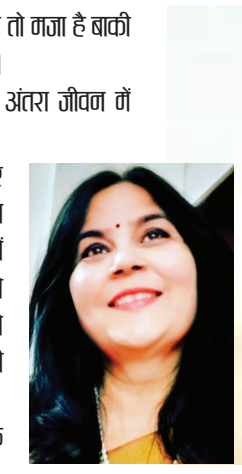

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**